संपादक की कलम से...

समाज के लिए हम कब संपन्न होंगे ?

आज से लगभग साढ़े छ: वर्ष पूर्व जून 2008 में सामाजिक गतिविधियों की जानकारी देने, समाज की समाज प्रतिभाओं को उचित मंच प्रदान करने तथा विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी एक ही छत के नीचे प्राप्त हो सके, इस भावना के साथ हमने गोलालारीय दर्शन पत्रिका के प्रकाशन का बीड़ा उठाया था, जो समग्र जैन समाज की अनेक पत्र–पत्रिकाओं के बीच मुखर रूप से स्वाभिमान पूर्वक अपने गोलालारीय समाज की बात रख सके। प्रारंभ में हमें लगा था कि काम थोड़ा मुश्किल है परन्तु अनेक नगरों से वरिष्ठजनों ने हमारा उत्साह बढ़ाकर हमारा मार्ग प्रशस्त किया, जिनके हम सदैव आभारी रहेंगे।

आज यह पत्रिका 4200 परिवारों को निरंतर भेजी जा रही है। कई सदस्यों ने पत्रिका के लिए विशेष सहयोगी बन आर्थिक सहयोग प्रदान कर हमें सुदृढ़ बनाया है तो कुछ ने एक वर्ष की राशि प्रदान कर हमारी भावनाओं का सम्मान किया है परन्तु आर्थिक सहयोग देने वाले सदस्यों की संख्या बहुत अधिक नहीं है। 4200 गोलालारीय परिवारों में से आर्थिक सहयोग करने वाले मात्र 206 सदस्य ही है (जिन्होंने ने 25 रुपये से अधिक राशि दी है)। जिसमें से (2100 रु. से अधिक राशि देने वाले सदस्य) विशेष सहयोगियों की संख्या मात्र 42 है । हम स्वयं विचार करे कि हमने कितना सहयोग दिया है, फिर भी गत 6 वर्षों से निरंतर आप तक पत्रिका पहुंचाने के लिए हम सतत् प्रयासरत है। आज हमारे समाजजनों का जीवन स्तर पूर्व की अपेक्षा काफी अच्छा व संपन्न है, फिर न जाने क्या बात है कि हम हमारी मातृ संस्था को दिल खोलकर सहयोग नहीं दे पाते है।

पत्रिका का अगला अंक कब निकलेगा ? विवाह योग्य प्रत्याशियों का परिवार कैसा क्या है इत्यादि सवालों के जवाब की तो हमसे अपेक्षा की जाती है परन्तु आज तक एक भी सदस्य ने यह नहीं पूछा कि गत 6 वर्षों से विषम परिस्थितियों में भी पत्रिका का कार्य कैसे चल पा रहा है ? प्रकाशन व डाक व्यवस्था की राशि का इंतजाम कैसे हो रहा है? कभी कभी हमारे जेहन में बरबस ही यह सवाल उठता है कि क्या हम अपने समाज की इस पत्रिका को प्रकाशित होते हुए देखना ही नहीं चाहते है, हम पुन: उसी अवस्था में जाना चाहते है जहां 4–5 समाजजन खड़े होकर यही चर्चा करे कि हमारा समाज कुछ भी नहीं करता है। हम तत्काल ही अपने समाज की तुलना दूसरे समाज के कार्यों से करने लगते है यह नहीं देखते है कि अन्य जैन समाज के सदस्यों ने समाज निर्माण में कितना त्याग व सहयोग दिया है। अरे,समाज की सुदृढ़ता सदस्यों के समर्पण एवं सहयोग पर ही निर्भर है। हम सशक्त समाज तो चाहते है परन्तु बिना किसी त्याग, समर्पण व सहयोग के, तो एक बार पूर्ण ईमानदारी से विचार करे कि भविष्य में हमारे हाथ क्या आयेगा ?

हमने तो चाहा था कि 4200 परिवारों में से 1000 परिवार ही विशेष सहयोगी या उससे उपर के सदस्य बन जावे तो एकत्रित धनराशी के ब्याज से ही यह पत्रिका आजीवन निर्बाध प्रकाशित होती रहेगी, शायद हमारा यह अनुमान गलत सिद्ध हुआ। वर्ष 2013–14 में पत्रिका को लगभग 35000 रु. की हानि हुई है। कुछ सदस्यों की सलाह है कि राशि एकत्रित करने नगर–नगर जाया जाये। कुछ का कहना है जो सदस्य आर्थिक सहयोग नहीं दे रहे है उन्हें पत्रिका भेजना बंद कर दिया जाये। कुछ की सलाह थी कि पत्रिका में सदस्यता फार्म प्रकाशित कर देवे समाजजन स्वत: ही सदस्य बन जायेंगे। गत अंक में हमने यह प्रयोग भी किया किन्तु मात्र 2 लोगों के फार्म प्राप्त हुये जिसमें से 1 सदस्य ने राशि भेजी और 1 सदस्य ने सिर्फ जानकारी। अब आप ही बतायें कहां है हमारा समाज प्रेम और कहां है हमारी संपन्नता और स्वाभिमान ? हम किस आशा के सहारे और कब तक इस संस्था को आगे चला पायेंगे ?

अनेक अवसरों पर हम हजारों लाखो रुपये पानी की तरह बहा देते है, धार्मिक आयोजनों में मुकुट धारण कर हजारों को बोली लेकर पुण्यार्जन करते आये है परन्तु अपनी मातृसंस्था के लिए हमारे हाथ और दिल सदैव खाली रहते हैं, ऐसा क्यों ? जब हम अपने समाज में मान सम्मान पाना चाहते है तो अपने ही समाज को दिल खोलकर सहयोग करने में पीछे क्यों रहते है?

यदि हम इस भरोसे रहेंगे कि कोई दूसरा सदस्य सहयोग करेगा तो यह संस्था कभी भी अपने मूल लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगी। अत: हम अपने सार्मथ्य को जाने और अपने समाज के एकमात्र मुखपत्र गोलालारीय दर्शन को समृद्ध बनाने के लिए सहयोग प्रदान करें। आपका छोटा सा सहयोग भी हमें बड़े कार्य करने की प्रेरणा देता रहेगा। तभी हम अपने कुल, कुटुम्ब व समाज के मान सम्मान को बढ़ाकर सुदृढ़ बना पायेंगे। विवाह वर्षगांठ, जन्मदिवस, विवाह शुभकामना एवं शोक संदेशों को प्रकाशित कराकर आप हमें आर्थिक संबल प्रदान कर सकते है। इस पत्रिका से जुड़े क्षेत्रीय प्रतिनिधि और संपादक मंडल सभी निस्वार्थ भाव से अपने व्यस्ततम जीवन में से समय व धन लगाकर पत्रिका आपके हाथों तक पहुंचा रहे है। हमारा यह प्रयास सतत बना रहे इसके लिए हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि इस पत्रिका को समाज की आवाज मानकर दिल खोलकर आर्थिक सहयोग प्रदान करें ताकि वर्ष में 5 बार प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक माह प्रकाशित हो सके।

– राजेन्द्र जैन 'बागो', संपादक

समाज गौरव

एडवोकेट स्व. श्री धन्नालाल जैन

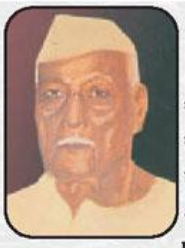

सामाजिक सेवा की भावना से ओतप्रोत होने के कारण एडवोकेट स्व. श्री धन्नालाल जैन का राजनैतिक जीवन से सीधा संबंध था। जब पूरा देश गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में बैचेन था तब आप अठाईस वर्ष की उम्र में राजनादगांव स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष बने। रियासतों पर राजाओं का नियंत्रण था जिससे मुक्ति के लिए प्रजा परिषदों का निर्माण पूरे देश में हो रहा था। आप राजनादगांव की प्रजा परिषद के सदस्य 1940 से 1946 तक रहे। 1946 में आपको नगर पालिका परिषद का अध्यक्ष बनाय गया। यह समय नादगांव को व्यवस्थित साफ सुथरा बनाने का रहा। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, विभिन्न क्षेत्रों में राज्य विकास को गति देने के लिए योजनायें/प्राधिकरणों का निर्माण हुआ। जिसमें आपको मध्यप्रदेश राज्य परिवहन प्राधिकरण का सदस्य बनाया गया, सन् 1960 तक आप इसके सदस्य रहे। राज्य स्तरीय बसों के परिवहन के प्रारंभ में शासकीय बसों की भूमिका का यह युग था। सन् 1952 के पहले आमचुनाव में आप मध्यप्रदेश विधान सभा में कांग्रेस के प्रतिनिधि बने। 1957 में जब नये प्रांतों का निर्माण हुआ और मध्यप्रदेश का नया नक्शा सामने आया, तब आप नये मध्यप्रदेश की नई विधानसभा के प्रजा निर्वाचित सदस्य रहे। आपके विधान सभा सदस्य की समयावधि 1952 से 1962 तक रही। सन् 1960, 1961 में क्षेत्रीय रियासती मण्डल, समिति के आप सदस्य रहे।

राजनांदगांव में दिगम्बर जैन पंचायत की स्थापना में सभी दिगम्बर जैनों को एक मंच पर लाकर उसके अध्यक्ष बने। आपने दो घड़ो में बंटी समाज का मनो–मालिन्य दूर कर आपसी सहमति से समाज को मजबूत किया, समाज में धर्ममय वातावरण परिपक्व होता गया। आज समाज में इतना धर्ममय वातावरण है कि निरंतर संघो के चातुर्मास हो रहा हैं। आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराजजी के आशीर्वाद से नये विकसित हो रहे तीर्थस्थल डोंगरगढ़ प्रसिद्ध तीर्थस्थलों की श्रेणी में शामिल है। डोंगरगढ़ मंदिर के स्वरुप परिवर्तन एवं संसाधनों के सर्वोपयोगी विस्तार में आपकी महती प्रारंभिक भूमिका रही। ऐसे सक्रिय निष्काम प्रवृत्ति के धारक एकता के पोषक, आकर्षक व्यवहार के धनी सहयोगी का पर्याय परिवर्तन 20 अक्टूबर 1998 को हो गया ।

संकलन – डॉ. पी.सी. जैन, चकराघाट, सागर

बेचना है –एम.आर.10 पर लॉर्ड आदिनाथ कालोनी में मंदिरजी के नजदीक का 1000 स्के. फीट का प्लाट बेचना है। संपर्क करे –जिनेन्द्र जैन, 09329715526

चलो पावगिरीजी चलें

विशाल जैन पवा, तालबेहट। श्री 1008 श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरीजी में स्वर्ण भद्र, गुणभद्र, वीरभद्र और मणिभद्र मुनिराजों का मोक्ष कल्याणक प्रतिवर्ष अगहन वदी2 से अगहन वदी 5 तक वार्षिक मेला के माध्यम से हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, जिसमें हजारों संख्या में भारत वर्ष से श्रद्धालु पहुंचकर पुण्यार्जन करते है। इस वर्ष भी यह मेला मुनिश्री सुव्रतसागर के मंगलमय सानिध्य में आयोजित किया जावेगा, मुनिश्री के पावन आशीर्वाद से क्षेत्र पर विश्व की अद्वितीय त्रिकाल चौबीसी एवं भगवान पारसनाथ स्वामी के गणधर मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है ।अत: 8 नवम्बर 2014 से 11 नवम्बर 2014 तक आयोजित होने वाले पावागिरीजी मेला में पहुंचकर पुण्य लाभ प्राप्त करें। यह मेला जैन समाज के शादी विवाह हेतु संबंध जोड़ने के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध है, जिसमें गोलालारीय दर्शन पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए मेला क्षेत्र पर विवाह योग्य प्रत्याशियों का बायोडाटा एकत्रित कर प्रकाशित करती रही है इस परम्परा को और सशक्त बनाने के लिए हम गोलालारीय समाज जिले, मण्डल एवं प्रदेश के प्रतिनिधि यहां पधारकर अपना सहयोग प्रदान करे। इस क्षेत्र का प्राकृतिक सौंदर्य, अतिशय एवं चमत्कार अवर्णीय है, प्रत्येक माह की 15 तारीख को पारसनाथ दरबार में सैकड़ो श्रद्धालु आते हैं।

''मुख्यमंत्री तीर्थदर्शन योजना''

मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक) उनके जीवनकाल में एक बार प्रदेश के बाहर स्थित विभिन्न तीर्थ स्थानों में से किसी एक स्थान की यात्रा सुलभ कराने हेतु शासकीय सहायता प्रदान करने की योजना प्रारंभ की गई है योजना अंतर्गत यात्रियों के यात्रा व्यय एवं उन्हें उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं को विनिश्यच शासन द्वारा किया जावेगा। धार्मिक यात्रा के लिये निर्धारित तीर्थ स्थानों की सूची में वर्तमान में 17 धार्मिक तीर्थ स्थानों को सम्मिलित किया गया है। यात्रियों का चयन कलेक्टर द्वारा निर्धारित प्रक्रिया अनुसार किया जावेगा तत्पश्चात संबंधित एजेंसी द्वारा यात्रियों के समूह को यात्रा पर ले जाने की व्यवस्था की जावेगी। सम्मेद शिखरजी,गया, काशी (वाराणसी), श्रवणबेलगोला, बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ, जगन्नाथपुरी, द्वारकापुरी, वैष्णोदेवी, हरिद्वार एवं अन्य कई तीर्थ शामिल है।